भारत के माननीय उप-राष्ट्रपति द्वारा इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 10 सितम्बर 2007 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (आईआईसी) और सेंटर फॉर पॉलिसी डायलॉग (सीपीडी), ढाका द्वारा 'राजनीति और सुरक्षा' पर आयोजित संगोष्ठी में दिया गया भाषण

10 सितंबर, 2007
नई दिल्ली।

देवियो और सज्जनो,

मेरे लिए यह विशेष सम्मान की बात है कि 'राजनीति और सुरक्षा' संबंधी आज की संगोष्ठी का उद्घाटन करने के लिए मुझे आमंत्रित किया गया है। यह भारत-बांग्लादेश वार्ता का तीसरा विषय है। यह वार्ता अब एक दशक से अधिक अवधि से प्रगति पर है। अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने अपना स्वायत्त चरित्र बरकरार रखा है और इसने भिन्न-भिन्न राजनीतिक विचारधाराओं और बौद्धिक पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को एकजुट किया है। दोनों देशों के बीच नागरिक समाज की यह एक विश्वसनीय अभिव्यक्ति है।

मेरी ऐसी मान्यता है कि वैचारिक स्पष्टता और पारिभाषिक सुनिश्चितता से विश्लेषण की प्रक्रिया में मदद मिलती है। इसलिए, विचार-प्रक्रिया के लिए प्रासंगिक प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए कुछ प्रश्न किए जाने की आवश्यकता है:

- राजनीति और सुरक्षा शब्दों से हमारा क्या आशय है?
- हम जिनकी राजनीति और जिनकी सुरक्षा के बारे में बात कर रहे हैं, उनको शामिल किए जाने और छोड़ दिए जाने की विषय वस्तु और प्रभाव के दायरे में हम उन्हें कैसे परिभाषित करते हैं?
- नागरिक समाज का इन अवधारणाओं के मामले में किस तरीके से, और किस हद तक प्रभाव पड़ता है?

इन सवालों के जवाब इस वार्ता के विषय के लिए प्रासंगिक हैं, और यह महत्वपूर्ण है कि हम उनके सही जवाब हासिल करें।

लंबे समय तक, बहुत लम्बे समय तक, सुरक्षा और राजनीति में बदलाव राज्य-केंद्रित रहा है। राज्य ही बहस के केंद्र में रहा है। सारी राजनीति उसी के इर्द-गिर्द घूमती रही है और राज्य-शक्ति के नियंत्रणकर्ताओं द्वारा परिभाषित राज्य के हितों के अनुरूप ही निर्णय होते रहे हैं। तथापि, हमारे अनुभव से इस दृष्टिकोण की सीमाएं भी उजागर हुई हैं।

आज, आवश्यकता ही ऐसी आन पड़ी है कि जिसने राजनीति और सुरक्षा के दो नए मानदंडों को केन्द्र में रखकर सोचने पर बाध्य कर दिया है -- पहला, उप-राष्ट्रीय

और सूक्ष्म स्तर पर, मानव सुरक्षा की अवधारणा है ; और दूसरा, अति-राष्ट्रीय और वृहत् स्तर पर मानव सुरक्षा की समस्याओं का समाधान करने की वह खोज है जो कि राष्ट्रीय सीमाओं के भी पार जाती है और इस तरह क्षेत्रीय सहयोग और उसको साकार करने के लिए इसे आवश्यक बना देती है।

एक दशक से भी अधिक समय पूर्व, यूएनडीपी की 1994 की मानव विकास रिपोर्ट ने मानव सुरक्षा की अवधारणा पर उपयोगी प्रकाश डाला था और भविष्यवाणी की थी कि यह अवधारणा 21वीं शताब्दी में समाज में क्रांति ला देगी। इसने मानव सुरक्षा के दो परस्पर आश्रित प्रमुख घटकों के रूप में भय से आजादी और अभाव से आजादी की पहचान की थी; ये दोनों ही अवधारणाएं जन-केन्द्रित हैं। वर्ष 2003 में प्रो. अमर्त्य सेन और श्रीमती सुदाको ओगाता की सह-अध्यक्षता वाला मानव सुरक्षा आयोग अपने प्रतिवेदन के माध्यम से इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय एजेंडे पर रखने वाला माध्यम रहा था।

हम ऐसी दुनिया में जी रहे हैं, जिसमें राष्ट्र-राज्य, जैसा कि इसे विगत हाल तक समझा जाता रहा है, का स्वरूप बदल गया है, जिसे फिलिप बोबिट्ट ने बाजार-राज्य का नाम दिया है। इस बदले स्वरूप के सकारात्मक लाभ हैं - वैश्विक वृद्धि और विकास, जो राष्ट्रीय सीमाओं के दायरे से परे है। वैश्वीकरण के लिए और खुले बाजार और आर्थिक नीतियों के लिए यही तर्क दिया जाता है। तथापि, इसी घातक तर्क के आधार पर, मानव सुरक्षा के नकारात्मक खतरे भी राष्ट्रीय सीमाओं से बंधे नहीं हैं। अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, बर्ड फ्लू, एचआईवी/एड्स, जैसी वैश्विक महामारियां, ग्लोबल वार्मिंग जैसी पर्यावरण की समस्याएँ और सुनामी और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाएँ, और आर्थिक मंदी, मुद्रा संकट, विश्व शेयर बाजार में उतार या तेल की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि जैसी दुर्बलकारी आर्थिक घटनाएँ हर किसी को प्रभावित करती हैं -- वे न तो सीमाओं का सम्मान करती हैं और न ही किसी की नागरिकता पहचानती हैं।

यह हमारे युग की विशिष्टता है; पिछली पीढ़ियों को स्थानीय मुद्दों के वैश्विक प्रभाव या वैश्विक मुद्दों के स्थानीय प्रभाव से निपटना नहीं पड़ता था। इस संदर्भ में, देशों और समाजों के बीच पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकलने और इन व्यापक सरोकारों को अपने भीतर स्थान दिए जाने की आवश्यकता है।

मुझे आशा है कि भारत-बांग्लादेश वार्ता में भारत और बांग्लादेश के बीच के संबंधों के इस आयाम को शामिल किया गया है, जिससे दोनों देशों की जनता के लिए इसकी प्रासंगिकता को जतलाने में मदद मिलेगी।

बात स्पष्ट है और यह एक खास प्रश्न से निकलती है। क्या हमारी जनता को सुरक्षा के सबसे बुनियादी तत्व -- अभाव से मुक्ति और भय से मुक्ति हासिल है? यदि सुरक्षा की परिभाषा का विस्तार किया जाए, तो इसमें मानवाधिकारों, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक पूरी पहुंच, सुशासन, आर्थिक विकल्प और अपनी पूरी क्षमता और गरिमा के साथ जीवन जीने का अवसर, जोखिम, अभाव और भूख से आजादी के समग्र दायरे को शामिल करना होगा।

तो हम कैसे एक स्थानीय और राष्ट्रीय राजनीतिक बहस का विकास करें, जो इसे संभव कर दिखाए? हम कैसे ऐसा रास्ता तैयार करें जो राजनीतिक रूप से फायदेमंद हो, जो एक व्यावहारिक राजनीतिक विकल्प साबित हो और जो आर्थिक तेजी के माहौल को लाना सुनिश्चित करे ताकि यह एक सक्षम आर्थिक विकल्प बन सके?

बृहत्, अधि-राष्ट्रीय स्तर पर इसका उत्तर क्षेत्रीय सहयोग में निहित है। इसके कुछ संकेत दक्षेस (सार्क) दस्तावेजों में उपलब्ध हैं। वर्ष 2005 में ढाका में आयोजित 13 वें सार्क शिखर सम्मेलन में राष्ट्राध्यक्षों अथवा शासनाध्यक्षों ने दोहराया था और मैं उसे उद्धृत करता हूं कि "दक्षिण एशिया के लोग दक्षेस की क्षमता और संचालक शक्ति के वास्तविक स्रोत हैं और क्षेत्रीय सहयोग को उनकी आशाओं और आकांक्षाओं के प्रति अधिक उत्तरदायी बनाने के लिए संकल्पित हैं।" इस वर्ष नई दिल्ली में हुए 14वें दक्षेस शिखर सम्मेलन में, दक्षेस देशों के नेता "समृद्धि और साझा आर्थिक सहयोग, क्षेत्रीय समृद्धि, दक्षिण एशिया के लोगों के लिए समृद्धि, लाभों के समान वितरण और लोगों तथा राष्ट्रों के बीच एकीकरण के अवसरों के लिए साझेदारी" निर्मित करने पर सहमत हुए थे।

इनके और अन्य सरकारी घोषणाओं तथा नागरिक समाज के काफी दबाव और आग्रह के बावजूद, वास्तविक सचाई यही है कि संस्थागत ढाँचे और प्रणालीगत सीमाएँ उनको साकार करने के मार्ग में बाधक हैं। हमारी निष्पादन प्रणाली एक बड़ी बाधा बनी हुई है।

अंतर-राज्यिक स्तर पर, मैं समझता हूं कि भारत और बांग्लादेश के बीच वार्ता के लिए साझे सरोकारों वाले चालीस कारक मौजूद हैं और उनकी सफलता अंतर-राज्यिक सहयोग पर निर्भर करती है। इनमें जिस तत्व की कमी है, वह है पर्याप्त राजनीतिक इच्छाशक्ति। इसे वार्ता में कैसे सन्निहित करें?

हमें यह स्वीकार करना होगा कि राजनीति और सुरक्षा के पारंपरिक मानदंड गतिरोध के स्तर पर पहुँच गए हैं। इसे पुनर्जीवित करने के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण अपनाया जाना आवश्यक है। क्या इस संगोष्ठी में भाग लेने वाले व्यक्ति, भारत और बांग्लादेश की जनता के सामान्य हित के लिए, इस चुनौती को स्वीकार करेंगे?

मेरी शुभकामना है कि यह संगोष्ठी अपने कार्य में सफल हो।

धन्यवाद।